THE ASSAM VALLEY SCHOOL
1995 - 2020

उड़ान

युवा अभिव्यक्ति की...

नवंबर, 2020

दीवाली

दीपों का त्योहार दीवाली
खुशियों की सौगात दीवाली ।
साफ-सफाई और रंगाई
जीवट का त्योहार दीवाली ।
भाई-दूज, गोवर्धन पूजा
त्योहारों का मेल दीवाली ।
प्रकृति प्रेम सबको सिखलाती
छठ पूजा संग लाये दीवाली ।
धूप, दीप, नैवेद्य आरती
पकवानों के संग दीवाली ।
धूम-धड़ाका और फुलझड़ी
राकेट की बौछार दीवाली ।
विविध रंगों से सजी रंगोली
रिश्तों का त्योहार दीवाली ।
शांति-एकता और प्रेम का
देती है संदेश दीवाली ।

शांभवी चौहान
कक्षा पाँचवीं

विजय हो

विजय हो विजय हो
सभी की विजय हो।
निराशा से हटकर
आशा की विजय हो।
दुःख से निपटकर
सुख की विजय हो।
असत्य से लड़कर
सत्य की विजय हो।

भय से निकलकर
साहस की विजय हो।
बुराई से हटकर
अच्छाई की विजय हो।
आलस्य से लड़कर
स्फूर्ति की विजय हो।
घृणा से हटकर
प्रेम की विजय हो।
लालच से मुड़कर
संतोष की विजय हो।

अज्ञानता के ऊपर
ज्ञान की विजय हो।
अधर्म से मुड़कर
धर्म की विजय हो।
अकर्मण्यता के ऊपर
कर्म की विजय हो।
दुराचार के ऊपर
सदाचार की विजय हो।
विजय हो विजय हो
सभी की विजय हो।

यश्वी मोदी
कक्षा - आठवीं

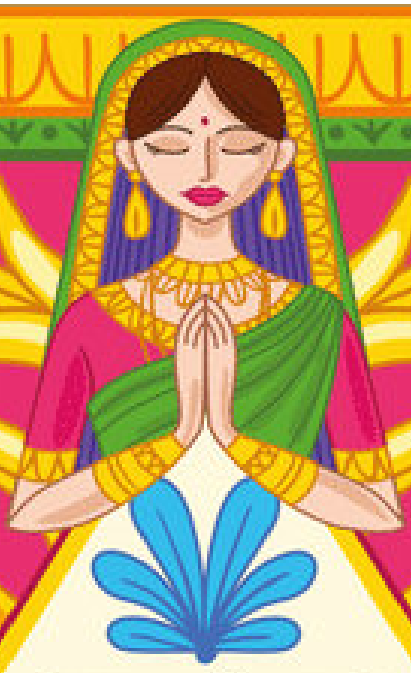

हमारा भारत

मेरा देश है सबसे प्यारा
सब देशों से है यह न्यारा
सत्य-अहिंसा को अपनाता
जगत में विश्वगुरु कहलाता।
कल-कल करती नदियाँ बहतीं
हरा-भरा धरती को करतीं
खेतों में दिखती हरियाली
बागों की है छटा निराली।
सुबह सवेरे सूरज आकर
सबको किरणों से नहलाता
हिम-शिखरों से गिरता झरना
प्यासों की है प्यास बुझाता।
पर्वत के ऊँचे शिखरों पर
औषधि के भण्डार समाए
खनिज-संपदा युक्त भूमि पर
हरे-भरे वृक्षों के साए।
विविध वर्ण और जाति-धर्म के
लोगों से यह धरा सुहाती
सभी लोग मिलजुल कर रहते
जन-मानस में प्रेम जगाती।

निहाल जजोदिया
कक्षा - आठवीं

एक शहीद की अनकही कहानी

सन् 2018 में स्नातक में अच्छे अंकों से उतीर्ण होकर, सेना में शामिल होकर, भारत माँ की रक्षा करने वाला सैनिक बनना मेरे बचपन का सपना रहा है। मैंने सेना का फार्म भरा और उसमें चयनित हो गया।

ट्रेनिंग खत्म करके कुछ दिन अपने घर वालों के साथ रहने के बाद, वह क्षण भी आ गया जब मुझे कश्मीर में सरहद पर तैनाती का आदेश मिला।

मेरी विदाई के दिन मेरे घर का माहौल बहुत खुशनुमा था क्योंकि मैं पहली बार नियुक्ति पर जा रहा था तो माँ मेरे लिए गीत गुनगुनाते हुए तरह-तरह के पकवान बना रही थी और बीच- बीच में अपने आँचल से अपने आँसू भी पोंछ रही थी जोकि मेरे जाने की वजह से निकल रहे थे पर वह बहुत खुश थी। मेरे पिता जी पूरे घर में गौरवान्वित होकर चहल कदमी कर रहे थे। आखिरकार वह पल आ ही गया जब मुझे अपने घर वालों से विदा लेकर अपने कार्यस्थल की ओर रवाना होना पड़ा।

मैं रेलगाड़ी से लंबा सफर तय करके जम्मू पहुँचा और आगे का सफर अपने फौजी साथियों के साथ फौजी बस से किया। ज्यों-ज्यों हमारा कारवाँ हमारे गंतव्य की ओर बढ़ रहा था त्यों-त्यों देशभक्ति का जज़्बा हमें मजबूत बना रहा था।

जब हम अपने यूनिट पहुँचें तो वहाँ का मनोरम प्राकृतिक सुंदरता को देखकर मैं गदगद हो गया। जब थोड़ा-सा खाली समय मिला तो मैंने अपने पिता जी के लिए पत्र लिखा और कश्मीर प्राकृतिक छटा का वर्णन किया। मुझे उम्मीद थी कि जब मेरे द्वारा भेजे गए पत्र को पिता जी पढ़ेंगे तो वे बहुत आनंदित होंगे। इन्हीं विचारों को सोचते-सोचते मुझे गहरी नींद आ गई। अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट सुनकर मेरी आँखें खुलीं तो मैंने देखा कि हमारी यूनिट में भगदड़ मची हुई है। दुश्मन ने हमला कर दिया है। कैंप में दस से बारह आतंकी घुस आए हैं और अचानक हुए इस हमले में उन्होंने कई फौजी भाइयों को बंधक बना लिया था। हम हमले के लिए तैयार नहीं थे, पर दुश्मन को सबक सिखाना जरूरी था।

धीरे-धीरे रेंगते हुए मैं शास्त्रागार पहुँचा, जहाँ पर हमने गोला-बारूद रखा था। मैंने वहाँ से ए. के. 47 बंदूक उठाई और चार-पाँच ग्रेनेड के गोले अपने कमीज़ के अंदर रखें। धीरे-धीरे मैं उस स्थान पर पहुँचा जहाँ आतंकियों ने मेरे कुछ फौजी साथियों को बंधक बनाया था। खिड़की से अंदर झाँककर देखा तो रोंगटे खड़े हो गए। मेरे साथियों को कमरे की दीवार से सटाकर खड़ा किया गया था और लगातार लोहे की सरिया से पीटा जा रहा था। उनके शरीर से रक्त की धाराएँ बह रहीं थीं।

मैंने बिना समय गवाएँ दुश्मन को ललकारा। यह सुनकर सारे दुश्मन बाहर आ गए और मुझे ढूढ़ने लगें। इतने में मौका पाकर मैं कमरे में गया और साथियों को आज़ाद कराया। उतने में उन्हें मेरी टोह मिल गई और मुझ पर गोलियाँ बरसाने लगें। वे कई थे और मैं अकेला। जब तक मेरी गोलियाँ चलीं तब तक मैंने उनका सामना किया और जब मेरी गोलियाँ खत्म हो तो मैं खुद उनके सामने चला गया ताकि उनके द्वारा चलाई गई गोली मुझे लगे और मेरे कपड़ों में छिपा ग्रेनेड फट जाए और मेरे साथ-साथ वे सब दुश्मन भी खत्म हो जाएँ। अंततः एक भयानक विस्फोट हुआ जिसमें मेरे साथ-साथ सारे दुश्मन भी खत्म हो गए।

कृष्ण अग्रवाल
कक्षा – आठवीं

परिवर्तन

करोना भैया यह आपने क्या किया ?
अच्छी खासी थी जिंदगी,
तलवार पर टाँग दिया
गुलाटी मारते थे दोस्तों के साथ,
पिंजरे में बंद कर दिया
कंप्यूटर, मोबइल को लगाने न देते थे हाथ,
अब पढ़ने के लिए उनके सामने बैठा दिया
माँ कहती थी चाट- पापड़ी, गोलगप्पे से होती है तबीयत खराब
अब माँ खुद हलवाई बनकर,
हमें खिलाती है जनाब
मनुष्य ने करोड़ों रुपए खर्च कर दिए,
गंगा और यमुना की सफाई में
प्रकृति ने खुद को दिया उपहार मुँह दिखाई में
हाथी, भालू और शेर हँस हँसकर के हुए दोहरे
जब देखा मनुष्य घर में बंद,
जोर-जोर से रो रहे
यह परिवर्तन अच्छा है भाई मेरे
हमने सबक ले लिया, अब तो चला जा रे।

आद्या , कक्षा - पाँचवीं

मेरा प्यारा असम वैली

मेरा प्यारा असम वैली
हरा – भरा असम वैली
खुशियों की यह सौगातें लाता
बच्चों को यह राह दिखाता
सबका प्यारा असम वैली
मेरा प्यारा असम वैली।

पशु-पक्षी सब मिलकर रहते
सफ़ेद बगुले घूमने आते
नटखट बंदर छलांग लगाते
कभी-कभी बच्चे डर जाते
कभी हाथी अकेले आते
कभी अपना परिवार ले आते
हरियाली है सबको लुभाती
सबका प्यारा असम वैली
मेरा प्यारा असम वैली।

ऊँची-नीची राहें इसकी
जीवन का है पाठ पढ़ाती
कठिन डगर है हमें बतलाती
रुकना मत चलते रहना
ऊँचे लक्ष्य तक बढ़ते जाना
असम वैली का नाम बढ़ाना
जगमग सितारा तुम बन जाना
सबका प्यारा असम वैली
हरा-भरा असम वैली।

असम वैली की रात सुहानी
झिलमिल तारों की कहानी
ठंडी हवा मन में मुसकाती
सपनों का है झूला- झुलाती
सबका प्यारा असम वैली
हरा-भरा असम वैली।

अद्रिका डे
कक्षा पाँच

चेतावनी

ये कटते हुए पेड़, यह उड़ता हुआ धुआँ,
ये बढ़ती हुई आबादी, यह सूखता हुआ कुआँ,
सब के सब दे रहे, मानव जाति को सचेत होने की दुआ।

कहती है ये बेज़ुबान सृष्टि,

हटा लो ऐ निर्दयी मनुष्य अपनी प्रलयकारी दृष्टि।
कर दो तुम हम पर यह एहसान,
करना सीखो तुम प्रकृति का मान।
यह प्रलय तो कुछ भी नहीं तुम्हारी करनी के आगे,
टूटते जा रहें हैं प्रकृति और मानव के बीच बंधे धागे।
हमने तो तुम्हें अपना सर्वस्व दिया,
पर बदले में तुमने हमें बर्बाद किया।
कहाँ हैं वे चहचहाती चिड़ियाँ ?
कहाँ हैं वे हँसती वादियाँ ?
तुम्हारे स्वार्थ में सब हो रहें हैं नष्ट,
अब तबाही दूर नहीं, यह भी है स्पष्ट।
अब भी है समय, नहीं है सब बिगड़ा,
संभल सको तो संभल जाओ, अब और समय न गँवाओ।
शीघ्र ही ए बात समझ लो तुम,
ना समझे तो सब-कुछ हो जाएगा गुम।
तुम्हारे लिए ही हम हैं बहुत चिंतित,
कहीं आने वाले कल से, न रह जाओ तुम वंचित।

नमन
कक्षा – नौवीं

चुटकुले

बंटी: तुम्हें पता है कि सबसे ज्यादा खुशी किस वक्त होती है?
रॉनी: कब?
बंटी: उस वक्त जब आधी रात को आँखें खुखें और पता चले कि अभी तो और सोना है, सुबह नहीं हुई है।
डॉक्टर: आपके एक्स-रे में आपकी हड्डी टूटी हुई है।
पप्पू: चलो भगवान का शुक्र है कि एक्स-रे में ही टूटी है, सच में टूटी होती तो काफी खर्चा होता।
टीचर: बताओ छिपकली दीवार पर क्यों चलती है?
स्टूडेंट: सर हम भी तो जमीन पर चलते हैं, कभी छिपकली ने कुछ कहा क्या?
दोपहर में पत्नी: लो डिनर करो जी।
पति (गुस्से में): बेवकूफ औरत... यह डिनर नहीं, लंच है।
पत्नी: बेवकूफ तुम हो, क्योंकि यह रात का बचा हुआ खाना है।
सुरेश: भाई मेरे फोन का बिल बहुत ज्यादा आया है, इतनी तो मैंने बात भी नहीं की।
कस्टमर केयर: अच्छा, वैसे आपका प्लान क्या है?
सुरेश: अभी तो मार्केट आया हुआ हूँ। शाम को खाना खाऊँगा, आप अपना बताइए।
एक पुलिस वाले के घर चोरी हो रही थी।
उसकी बीवी: उठो जी, घर में चोरी हो रही है।
पुलिस वाला नींद में : मुझे सोने दो यह मेरी ड्यूटी का समय नहीं है।
पिता अपने बेटे से - देखों बेटा, जुआ नहीं खेलते। यह ऐसी आदत हैं कि यदि इसमें आज जीतोगे तो कल हारोगे, परसों जीतोगे तो उससे अगले दिन हार जाओगे।
बेटा : बस, पिताजी... मैं समझ गया, आगे से मैं एक दिन छोड़कर खेला करूंगा।
एक तोता एक कार से टकरा गया, तो कार वाले ने उसे उठाया और पिंजरे में डाल दिया।
दूसरे दिन जब तोते को होश आया, वह बोला, आईला.. जेल..
कार वाला मर गया क्या...
छोटा बच्चा अपना रिजल्ट लेकर आया और पिता से बोला : पापा आप बहुत किस्मत वाले हैं।
पिता: कैसे बेटा?
बच्चा: मैं फेल हो गया हूँ। अब आपको मेरे लिए नई किताबें नहीं खरीदनी पड़ेगी।

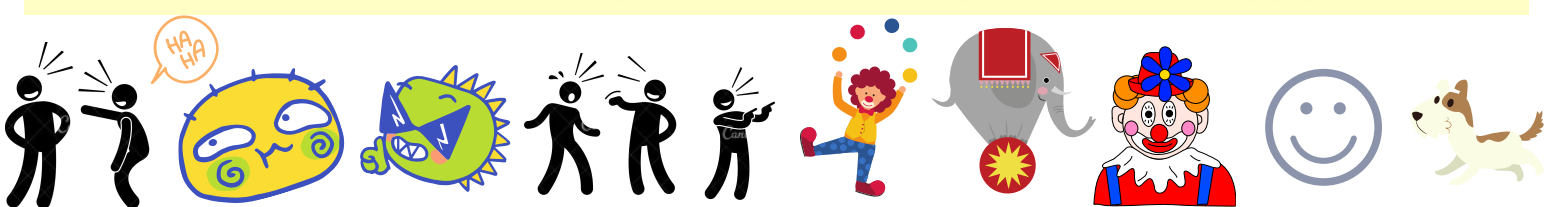

संपादकीय मण्डल

मुख्य संपादक : आर्यन खाटूवाला

सहायक संपादक मण्डल : सिकुनप्रिया गोस्वामी

आकांक्षित शर्मा

आवरण पृष्ठ सज्जा : अनुष्का जोशी

पृष्ठ सज्जा : आकांक्षित शर्मा

संकलनकर्ता : अंशु कुमारी.

शिक्षक मण्डल : समस्त हिंदी विभाग

मार्गदर्शक : डॉ. विधुकेश विमल

अस्वीकरण:- उड़ान पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएँ विद्यार्थियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हैं। विद्यालय, विद्यार्थियों की निजी अभिवयक्ति के प्रति तटस्थ भाव रखता है।